Navchetana Homilies

Jan 06, 2019

Num 24:15-25

Is 11:1-5

Tit 3:1-7

Mt 3:13-17

प्रभु प्रकाश पर्व

आज प्रभु–प्रकाश का दिन है। तीन महती घटनाओं की आज याद की जाती है: ज्योतिषियों का पूरब से आकर बालक येसु के चरणों में भेट चढ़ाना, यरदन नदी में प्रभु येसु का बपतिस्मा और उन पर पवित्रात्मा का उतर आना और काना के विवाह में येसु का स्वयं को प्रकट करना। तीनों घटनाओं में ईश्वर के पुत्र के मनुष्यों के सामने प्रकट होने की बात है। ज्योतिषी गैर–यहूदी थे, लेकिन ईश्वर को खोजनेवाले थे, इन गैर–यहूदियों को स्वयं प्रकट करके येसु हमें यह सन्देश देना चाहते हैं कि मुक्ति केवल ईश्वर की चुनी हुई प्रजा इस्त्राएल के लिए नहीं है, बल्कि, सारी मानवजाती के लिए है। जो सच्चे दिल से ईश्वर को पाना चाहते हैं, ईश्वर उनके पास आ जाता है। अनेक कठिन परिस्थितियों से जूझते हुए ही वे ज्योतिषी प्रभु–सन्निधि में आ पहुँचते हैं। यहूदियों का वह नवजात

राजकुमार राजा हेरोद के महल में मिलेगा, यह विचार उन्हें आगे बढ़ाता रहा। लेकिन वहाँ उसे न पाकर वे निराश नहीं हुए, उन्होंने अपनी खोज जारी रखी। आखिर उनके उस अदृश्य मार्गदर्शक ने उन्हें जिस भवन में पहुँचाया, वह एक साधारण, गरीब भवन था और वह राजकुमार एक साधारण बच्चा था। उसे देखकर वे हतप्रभ या निराश नहीं हुए। क्योंकि वे स्वयं धन के पुजारी नहीं थे। गरीब परिस्थिति उनके लिये निराशाजनक नहीं थी, क्योंकि उस गरीबी और साधारणत्व के परदे के पीछे छिपे महान् रहस्य को समझने की सूक्ष्म दृष्टि उनको मिल चुकी थी। उसी के कारण वे अपने देश से एक अज्ञात देश की ओर जाने को तैयार हुए थे। वे उस बच्चे का महत्व समझ गये और सोना–चाँदी–लोबान की राजकीय भेंट करके उसके सामने आत्म–समर्पित हुए।

दूसरी घटना यरदन नदी की है। वहाँ यहूदी जनता के सामने औपचारिक रूप से येसु प्रकट होते हैं। सारी धर्मविधियों को पूरा करने के लिये पापियों के संग में आकर पश्चाताप का बपतिस्मा ग्रहण करनेवाले येसु के ऊपर पवित्र आत्मा उतर आता है, और येसु के मुक्ति–कार्य पर मुहर लगाता है, और स्वयं पिता ईश्वर इन शब्दों से येसु की सही पहचान दिलाते हैं– "यह मेरा प्रिय पुत्र है। मैं इस पर अत्यन्त प्रसन्न हूँ।

तीसरी घटना में, पानी को दाखरस में बदल कर येसु मुख्य रूप से अपने शिष्यों के सामने अपने को प्रकट करते हैं। माँ की इच्छा के कारण वे पिता द्वारा निश्चित समय के पहले ही स्वयं को प्रकट करते हैं। योहन लिखते हैं कि उस चमत्कार के कारण शिष्यों ने उस पर विश्वास किया।

येसु के स्वयं प्रकटीकरण के इन तीनों घटनाओं द्वारा एक नये युग का शुभारंभ हुआ। सदियों की प्रतीक्षा और इन्तजार के बाद अब मानव मुक्ति का संन्देश सुनाने के लिये ईशपुत्र धरती पर उतर आया है। उस मंगलमय नवयुग के सम्बन्ध में नबी इसयाह ने भविष्यवाणी की थी। मसीह का जन्म दाऊद राजा के वंश में होने की बात कहने के बाद नबी उस के सम्बन्ध में लिखते हैं– "प्रभु का आत्मा उसपर छाया रहेगा, प्रज्ञा तथा बुद्धि का आत्मा, सुमति तथा धैर्य का आत्मा, ज्ञान तथा ईश्वर पर श्रद्धा का आत्मा। वह प्रभु पर श्रद्धा रखेगा। वह न्यायपूर्वक दीन–दुःखियों के मामलों पर विचार करेगा, और निष्पक्ष होकर देश के दरिद्रों को न्याय दिलायेगा। तब भेड़िये मेमने के साथ रहेंगे, चीता बकरी की बगल में लेट जायेगा, बछड़ा तथा सिंह–शावक साथ–साथ चरेंगे और बालक उन्हें हाँक कर ले चलेगा। गाय और रीछ में मेल–मिलाप होगा और उनके बच्चे साथ–साथ रहेंगे। सिंह बैल की तरह भूसा खायेगा। दुधमुहाँ बच्चा नाग के बिल के पास खेलता रहेगा और बालक करैत की बाँबी में हाथ डालेगा। समस्त पवित्र पर्वत पर न तो कोई

बुराई करेगा और न किसी की हानि, क्योंकि जिस तरह समुद्र जल भरा है, उसी तरह देश प्रभु के ज्ञान से भरा होगा।" (crf. Is. 11:1-11)

प्रभु का आगमन तो हुआ है, लेकिन नबी द्वारा घोषित उस आदर्श युग का आगमन कहाँ हुआ? विपरीत प्रवृत्तिवाले जीवजन्तु तब उस युग में मेल–मिलाप से रहेंगी, लेकिन मनुष्य की स्थिति क्या है? व्यक्ति और व्यक्ति के बीच में, देश और देश के बीच में न प्रेम है, न मेल–मिलाप है। हर जगह घृणा, बैर, आतंक, दुश्मनी और अहंकार का बोलबाला है। कारण क्या है? कारण यह है कि लोगों के मन में प्रभु का ज्ञान नहीं है। जहाँ ईश्वर को जानने की इच्छा नहीं है, जहाँ ईश्वर की आवश्यकता ही महसूस नहीं होती है, वहाँ प्रभु का ज्ञान कहाँ से आयेगा?

ईश्वर की इच्छा जानने और उसे जीवन में उतारने का संकल्प करते हुए हम नबी द्वारा उद्घोषित उस सुवर्ण युग के आगमन के लिये प्रयत्न करें।

फादर माइकिल पालाँपरंबिल सि.एम.आई